



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

प्रसारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उपखण्ड (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 28] मई चिल्डी, सोमवार, जनवरी 17, 1972/पौष 27, 1893

No. 28] NEW DELHI, MONDAY JANUARY 17, 1972. PAUSA 27, 1893

इस भाग में भिन्न वृक्ष तंत्रिय द्वारा जाती है जिससे कि यह द्वारा संकलन द्वारा रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT

(Transport Wing)

NOTIFICATION

New Delhi, the 17th January 1972

S.O. 37(E).—In pursuance of rules 100, 101 and 103 of the Defence of India Rules, 1971, the Central Government hereby makes the following Order in regard to compensation payable for requisitioning or acquisition of motor vehicles:—

1. In rule 100 of the said rules,—

- (1) the rate of interest referred to in clause (i) shall be six per cent per annum (simple interest);
- (2) the rate of depreciation referred to in clause (ii) shall be twenty-five per cent per annum and depreciation shall be calculated—
 - (a) on the basis of the cost of the vehicle if, being new, it had been purchased less than a year before it is requisitioned,
 - (b) in any other case, on the basis of its written down value on the anniversary of its purchase as a new vehicle (that is to say, on the last date of completion of a whole number of years from the date of its purchase as a new vehicle) which falls on or before the date from which compensation is payable, notwithstanding that such purchase had not been made by the persons from whom the vehicle has been requisitioned.

Explanation.—The term written-down value shall have the same meaning as in clause (ii) of sub-section (1) of Section 32 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961);

(3) the percentage referred to in clause (iii) shall be six per cent of the written-down value of the vehicle calculated on the basis of the rate of depreciation and in the manner indicated in sub-item (2);

(4) the further amount required to be specified under clause (iv) shall be equal to a sum representing the difference between the daily rates of hire, fixed by the State Transport Authority constituted under section 44 of the Motor Vehicles Act, 1939 (4 of 1939) and the compensation worked out in accordance with sub-items (1), (2) and (3).

II. The depreciation referred to in the first proviso to rule 101 of the said rules shall be calculated at twenty per cent per annum and in the manner prescribed in sub-item (2) of item I.

III. (1) The compensation as determined by the competent authority for requisitioning or acquisition of a vehicle shall be paid within a period of two months from the date on which it falls due.

(2) The rate of interest referred to in the proviso to rule 103 of the said rules shall be $4\frac{1}{2}$ per cent per annum (simple interest).

(3) After compensation in arrear on the first day of each month following the date of requisition of a vehicle has been worked out, interest shall be payable on such part of that amount as has been outstanding for more than two months, periods of less than a month being ignored for the purpose of computing the interest.

[No. 37-TAG(54)/71.
K SIVARAJ, Jt Secy

नौवृहन श्रीर परिवृहन मंत्रालय

(परिवृहन वक्त)

श्रधिसूचना

नई दिल्ली, 17 जनवरी, 1972

एस० आ० 37(भ).—भारत रक्षा नियम, 1971 के नियम 100, 101 और 103 के अनुसरण में, केन्द्रीय सरकार, मोटर यानों के अधिग्रहण या अर्जेन के लिए संदेय प्रतिकर के सम्बन्ध में एतद्वारा निम्नलिखित आदेश करती है :—

1. उक्त नियमों के नियम 100 में,—

(1) खंड (i) में निर्दिष्ट ब्याज की दर छह प्रतिशत प्रति वर्ष (साधारण ब्याज) होगी,

(2) खंड (ii) में निर्दिष्ट अवक्षयण की दर पचीस प्रतीशत प्रति वर्ष होगी और अवक्षयण—

(क) यदि यान नया है और अधिग्रहृत किए जाने से पूर्व एक वर्ष के भीतर खरीदा गया है तो यान की लागत के आधार पर परिकलित किया जाएगा,

(ख) किसी अन्य दशा में, नये यान के रूप में उसका क्रय उसके उस क्रय वर्ष के पूरा हो जाने पर (अर्थात् नए यान के रूप में उसके क्रय की तारीख से पूरे पूरे वर्षों के पूर्ण होने की अन्तिम तारीख को) जो उस तारीख को या उससे पूर्व पड़ता हो जि ऐ प्रतिकर संदेय है, इस बात के होते हुए भी किएसा क्रय उस व्यक्ति द्वारा नहीं किया गया था जिसने यान अधिग्रहीत किया भवा था, उसके अवलिखित मूल्य के आधार पर परिकलित किया जाएगा,

रप्टी करण :—अवलिखित मूल्य का वही अर्थ होगा जो आय-कर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 32 की उपधारा (1) में उसका है,

(3) खण्ड (iii) में निर्दिष्ट प्रतिशत, अवक्षयण की दर के आधार पर अर उप-मद (2) में उपदर्शित रीति से परिकलित यान के अवलिखित मूल्य का छह प्रतिशत होगा।

(4) खण्ड (iv) के अधीन निर्दिष्ट की जाने के लिए अपेक्षित कोई और रकम उस राशि के बराबर होगी जो मोटर यान अधिनियम, 1939 (1939 का 4) की धारा 44 के अधीन गठित राज्य परिवहन प्राधिकारी द्वारा नियत की गई भाड़े की दैनिक दरों और उप-पद (1), (2) और (3) के अनुसार संगत प्रतिकर के प्रन्तर के बराबर हो।

2. उक्त नियमों के नियम 101 के प्रथम परन्तुक में विनिर्दिष्ट अवक्षयण बीस प्रतिशत प्रतिवर्ष और मद 1 की उपमद (2) में विवित रीति से परिकलित किया जाएगा।

3. (1) किसी यान के अधिग्रहण या अर्जन के लिए सक्षम प्राधिकारी द्वारा अवधारित प्रतिकर उस तारीख से जिसको वह शोध्य हो जाता है दो मास की अवधि के भीतर अदा कर दिया जायेगा।

(2) उक्त नियमों के नियम 103 के परन्तुक में निर्दिष्ट व्याज की दर $4\frac{1}{2}$ प्रतिशत प्रतिवर्ष (साधारण व्याज) होगी।

(3) किसी यान के अधिग्रहण की तारीख के पश्चात प्रत्येक मास के प्रथम दिन को जो प्रतिकर बकाया है उसे संगणित कर लेने के पश्चात व्याज उस रकम के उतने भाग पर सदैय होगा जितना वो मास से अधिक के लिए परीदेय रहा है तथा व्याज की संगणना के प्रयोजन के लिए एक मास से कम की अवधियों की उपेक्षा कर दी जाएगी।

[मं० ३७-टी० ए० जी० (५४)/७२]

के० शिवराज, संयुक्त सचिव।
भारत भ्रकार।

